व्याक्रि लिय उनामाणित भिनात भन सिकी छोड़ार्यानीय ममाह्य तर्रह রাশের উত্তর হাত जातात दिस्त या दिलामान : स्नूल वार्न भिरंड (योग इन्हे मिलाइन जिल्ला नाष्ट्र निक्र हिना — जिल्ला अल , प्राचित उपस्व कार्य फिलत लिएस भूरेकी काना क्रमताहात बङ्गित , व्य अधिकाइभाग द्वाल, समाद्र महालय मायुर्व द्वालु द अवास्त्रकादार आधार १०६ यात्रकार कर्याच्या उन्पाल होत्ड (६०६ बी:) प्यासीत हारण्य मिला कहन - उमहार्ग साम हासाई व्याप प्रमान आहारणात जिले नुतं, पंजन हमिनिभयाम- यस (कर्तां स्वती ) निर्देशि (सिनियुर), उडकल (यालभार), अस्त्रीक्ष लिला दिन अधिक द्वार देश कार देश कार है। भन्ति भन्ति स्थिति स्थिति स्थिति द्या

- 97 A V 0 = 36 5 x 0 = 45 6 - 0 - 0

निमा कि उसार सुरार :- स्वराय उ नामकि ते सार्ध सार्ध सामकि सामकि उतिक दश, भूग्व शासकि सामकि सामुग्वस्त नामकि निम्ह आक्राति स्वाल स्वराय स्वराय स्वराय द्रा, स्वाप्यित्व स्वराय स्वरीत स्वापकि स्वराय प्रमायन स्वराय स्वरीत स्वराय स्वरीत स्वराय प्रमायन स्वराय स्वरीत स्वराय स्वरीत स्वराय प्रमायन स्वराय स्वरीत सामकि स्वरीत सामकि प्रमायन सिमान सामकि स्वरीत सामकि स्वरीत

मिर्डि मार्गि मार्गि हिला ने किला ने किला ने निर्देश के निर्म मार्गि के निर्मित के निर्

कृष्टि : - अवल्या मान्या माना प्राप्ति माना कर्या न्या मान्य निर्माह प्रवृत्ति निर्माह नि